PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

आपका बंटी : एक विमर्श

• **समीक्षा कश्यप** • **लक्ष्मी सिंह** • **श्वेता कुमारी**
• **कुमारी मनीषा**

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Kumari Manisha

Abstract : स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये हिन्दी साहित्य जगत की एक ऐसी समर्थ लेखिका हैं जो कथा के माध्यम से जीवन के मर्म को अभिव्यक्त करने में सफल रही हैं। आज आर्थिक उदारीकरण के इस युग में स्वार्थपूर्ति हेतु व्यक्ति जिस दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है वह चिंतनीय है। संवेदना का ह्रास इस हद तक हो जाना कि अपने ही अंश की संवेदना से रिक्त हो जाना–हमारे समक्ष अनेकानेक प्रश्न उपस्थित कर देता है। एक ओर जहाँ माता–पिता के बीच का प्रेम और अनुराग बच्चे के सर्वांगीण विकास का आधार बनता है वहीं दाम्पत्य जीवन के तनाव बच्चे के लिए त्रासदी उत्पन्न करते हैं। बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। बाल मनोविज्ञान पर आधारित यह उपन्यास भविष्य में आने वाली अत्यंत गंभीर समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कराता है, जिसके लिए हमें आज से ही सजग होना होगा। अतएव आज के आधुनिक परिवेश के दिनों–दिन बदलते स्वरूप को देखते हुए, आवश्यकता है इस गंभीर समस्या को समझने की और उसका निदान सोचने की। हमने इसी समस्या को लेकर परियोजना कार्य तैयार किया है।

संकेत शब्द (Keywords) : बाल–विमर्श, बाल मनोविज्ञान, स्त्री–विमर्श, स्वार्थ एवं संवेदना का ह्रास, आत्ममंथन, कर्त्तव्यबोध।

समीक्षा कश्यप
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

लक्ष्मी सिंह
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

श्वेता कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमारी मनीषा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : drmanishavikash01@gmail.com

भूमिका :

''बंटी किन्हीं दो–एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है–अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में।'' (भंडारी, VIII)

''शकुन–अजय के संबंधों की टकराहट में सबसे अधिक पिसता बंटी ही है शकुन और अजय तो आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक–दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करे ? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा है, यानी खंडित–निष्ठा उसकी नियति है।'' (भंडारी, IX)

''आज पापा और डॉक्टर साहब के चेहरे भी तो घुल–मिल जा रहे हैं। पापा की बात सोचो तो डॉक्टर साहब का चेहरा आ जाता है। और डॉक्टर साहब की बात सोचो तो पापा का चेहरा। जैसे दोनों चेहरे एक ही हो गए, अलग–अलग रहे ही नहीं।'' (भंडारी, 157)

'' बंटी के मन का दुःख और गुस्सा धीरे-धीरे डर में बदलने लगा।'' (भंडारी, 135)

''बंटी के बाहर का ही नहीं, भीतर का भी जैसे सबकुछ थम गया । थम नहीं गया जैसे सबकुछ सहम गया। जिद, गुस्सा, रोना-चिल्लाना।'' (भंडारी, 163)

''नहीं, ये ममी नहीं हैं। ममी की बाँहें, ममी का छूना... और एकाएक ही बड़ी जोर से ममी की याद आने लगी। '' (भंडारी, 191)

''आँसू-भरी आँखों के सामने डिब्बे की हर चीज, बैठे हुए अजनबी लोगों के चेहरे पहले धुँधले हुए, और धुँधले हुए और फिर एक-दूसरे में मिल गए। पापा का चेहरा भी उन्हीं में मिल गया और फिर धीरे-धीरे सारे चेहरे एक-दूसरे में गड्डमड्ड हो गए।'' (भंडारी, 208)

''मन्नू ने 'आपका बंटी' में इन तीनों को लिया है-टूटते वैवाहिक सम्बन्धों में संतान की मनोवैज्ञानिक स्थिति, वैवाहिक संबंध भी टूटने-जुड़ने की प्रक्रिया से गुजरेंगे और इस असुरक्षित दुनिया में स्त्री अपने मानसिक प्रलय की कथाएँ भी खुलकर बयान करेगी-मगर इस सबकी मनोवैज्ञानिक दहशत भुगतनी होगी बंटी यानी संतान को।'' (यादव, 229)

आज के इस बाजारवाद का प्रभाव लोगों के अंदर इस हद तक घर कर गया है कि उन्हें अपने बिखरते परिवार की भी फिक्र नहीं रहती । इस पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों की आत्मनिर्भरता कभी-कभी परिवार विच्छेद के रूप में उभर कर सामने आती है, जिसका प्रभाव सबसे ज्यादा बच्चों की मानसिकता पर पड़ता है, फलस्वरूप एक मासूम सा बचपन मुरझा कर रह जाता है। यह उपन्यास आज के आधुनिक समाज की उस व्यवस्था से पर्दा उठाता है जिसमें लोग अपनी स्वार्थपरता हेतु बच्चों की भावनाओं को अनदेखा ही नहीं करते उनकी अवहेलना करने से भी गुरेज नहीं करते। इस उपन्यास के शिल्प में गतिशीलता है, क्योंकि यहाँ संघर्ष घटनाओं में न चलकर विचारों में चलता है।

आधुनिक गद्य-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें व्यक्तिगत और अनुभूत सत्य की प्रामाणिकता को बरकरार रखकर, सामाजिक परिवेश और समय के बड़े सत्य को भी व्यंजित करने का प्रयास किया जा रहा है। परिवेश में परिवर्तन के साथ जब व्यक्तिगत संबंधों में संक्रमणता आती है तब उससे न संगति बैठाना आसान होता है और न ही उसे उसकी समग्रता में समझ पाना। इसके परिणामस्वरूप जो भीतरी बेचैनी, संघर्ष और द्वंद्व पैदा होता है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए परंपरासिद्ध साँचे और विन्यास असंगत और अत्यन्त कम मालूम पड़ने लगते हैं। एक ओर परंपरा और संस्कार अचानक से अलग नहीं हो पाते और दूसरी ओर नई सोच पर उनकी परछाईं धीरे-धीरे सिमटने सी लगती है। ऐसी स्थिति में रचना में नयापन और प्रयोगशीलता का समावेश होने लगता है।

उद्देश्यः

हमारा समाज सांस्कृतिक और सामाजिक संक्रमण से गुजर रहा है, परन्तु आधुनिकीकरण का जो स्वरूप आज उभर कर हमारे समक्ष आ रहा है, उसमें लोग अधिक से अधिक आत्मकेन्द्रित होते जा रहे हैं। यह आत्मकेन्द्रिता अहं को जन्म देती है। यही अहं जब दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करता है तो इसका सीधा असर बच्चों पर पड़ता है !!

इस परियोजना-कार्य के माध्यम से हमारा यह प्रयास है कि बाल मन की संवेदनाओं और भावनाओं की रक्षा हो सके। पति-पत्नी के अहं की टकराहट से तार-तार होती बच्चे की जिंदगी को बचाने का प्रयास किया जा सके। आज के युग में भारतीय समाज की विवाह जैसी पवित्र संस्था को उसके उत्तरदायित्व का भान कराया जा सके, ताकि मासूम बंटी की तरह किसी और की जिंदगी त्रासद होने से बच सके।

शोध प्रविधि :

इस परियोजना के लिए हमने शोध प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया है। तथ्यों के सग्रंह के लिए हमने अध्येय रचनाओं पर किये गये पूर्व शोध ग्रंथों से संबंधित, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं मीडिया की मदद ली है।

हिन्दी साहित्य जगत में महिला कथा लेखिका के रूप में मन्नू भंडारी एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी रचनाएँ समाज के हर मुद्दे, हर पहलू को बहुत सरलता के साथ साझा करती हैं। अपनी रचनाओं में मन्नू भंडारी ने नारी के आधुनिक दृष्टिकोण को उजागर किया है। इन्होंने शोषण और पराधीनता का जीवन-यापन करती नारी का सजीव चित्रण किया तथा नारी जीवन से संबंधित समस्याओं को न केवल अपनी रचनाओं में

अंकित किया है बल्कि अपनी दृष्टि से समाधान भी प्रस्तुत किया है। इन्होंने नारी को केवल देह मात्र नहीं समझा क्योंकि यह सोच भारतीय सस्कृति के विरूद्ध है। मन्नू भंडारी ने अपने उपन्यासों में विवाह के बदलते स्वरूप को उजागर किया है। इनका मानना है कि आजकल विवाह स्त्री के लिए संबंध मात्र न रहकर कभी-कभी बेड़ी भी बन जाती है। इन्होंने अपने उपन्यास में इस बंधन को अस्वीकृति दी है। मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी पात्र चाहे जो हो-अमला, रंजना, शकुन या फिर मिनी, सभी नायिका स्वयं को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में समाज के समक्ष प्रकट करती हैं। नारी और माता का द्वंद्व इस वैश्विक युग की एक ज्वलंत समस्या के रूप में उभर रहा है; जो चिंतनीय एवं विचारणीय विषय है। मन्नू भंडारी ने अपने इस उपन्यास में इसी समस्या के विकृत परिणाम को दिखाया है।

यह कहना अत्यन्त कठिन है कि मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' एक नौ साल के बच्चे की घायल संवेदनाओं की कहानी है या समाज में अपनी अस्मिता, अपनी जगह बनाने की कोशिश करती एक स्त्री शकुन की कहानी है। इसका कारण यह है कि दोनों ही की त्रासदी एक-दूसरे से इस प्रकार उलझी और गुँथीं हुई है कि इसका निर्णय लेना मुश्किल है। वैश्विकरण के इस युग में एक ओर जहाँ नारी अपनी अस्मिता बनाने हेतु आकाश की उँचाइयों को छू रही है, वहीं इसके लिए वह अपने परंपरागत स्वरूप का मर्दन करने से भी नहीं चूकती, फलस्वरूप बंटी जैसा पात्र हमें हमारे भारतीय समाज में भी यत्र-तत्र बिलखता, सिसकता, सहमा सा दिख पड़ता है।

जहाँ माता-पिता के बीच का प्रेम बच्चे के विकास का आधार बनता है, वहीं दाम्पत्य जीवन में आए तनाव बच्चे के लिए त्रासदी उत्पन्न करते हैं और उसी त्रासदी का शिकार बंटी होता है। बंटी के माता-पिता शकुन और अजय एक-दूसरे को न झेल पाने के कारण दूसरा विकल्प ढूंढ़ लेते हैं, परन्तु बंटी दोनों को एक करने के प्रयास में विफल होने के कारण अंतर्मुखी हो जाता है और यह प्रवृत्ति इस हद तक बढ़ जाती है कि वह असामान्य (एब्नार्मल) की स्थिति तक पहुँच जाता है।

बच्चे की नजर और घायल होती संवेदना की नजरों से देखी गई परिवार की यह दुनिया एक भयानक दु:स्वप्न के समान हमारे समक्ष उपस्थित होती है। शकुन के जीवन का यही सत्य है कि वह एक स्त्री की महत्त्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता की आकांक्षी है जो पुरूष के लिए चुनौती है-परिणामस्वरूप दाम्पत्य जीवन का तनाव उसे अलगाव की स्थिति में ला देता है। यह महज शकुन का नहीं बल्कि समाज में निरंतर अपनी जगह बनाती, अपने पाँव पसारती और अपना कद बढ़ाती आज की 'नई स्त्री' का सच है। विडम्बना तो यह है कि पति-पत्नी के इस द्वंद्व में सबसे ज्यादा पिसता है बंटी, जो एकदम निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है। बच्चे के मन में बड़ों के इस संसार को पहली बार मन्नू भंडारी ने पहचाना। जाने-अनजाने माता-पिता द्वारा अपने कर्त्तव्य से च्युत होने के फलस्वरूप उत्पन्न बच्चे की मानसिकता का हृदयस्पर्शी चित्र उकेरा है, मन्नू भंडारी ने।

''बीसवीं सदी कई दृष्टियों से एक बेरहम सदी है, लेकिन यही वह सदी भी है जिसमें शोषण अैर अन्याय के सभी रूपों के प्रति चेतना भी पैदा हुई है और उनके खिलाफ संघर्ष का माहौल भी बना है। यह स्वाभाविक है कि स्त्री के साथ-साथ बच्चे का सवाल भी उभर कर आये। स्त्री तो अपना सवाल खुद उठा सकती है, पर बच्चे की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि वह अपनी पीड़ा को स्वयं प्रश्न नहीं बना सकता । अत: यह दायित्व दूसरों का हो जाता है। '' (राजकिशोर, 9) हिन्दी उपन्यास विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए मन की सतह को भी स्पर्श करने लगा जहाँ उसने स्त्री और पुरूष के मन को छुआ वहीं बालक के कोमल हृदय में भी झांकने का प्रयास किया । इसी प्रयास की अद्‌भुत कृति है 'आपका बंटी'। यह उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। प्रश्न उठता है कि बाल मनोविज्ञान है क्या ? '' **बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन गर्भाधान से लेकर परिपक्वता तक विकासात्मक दृष्टिकोण से करता है। बाल-मनोविज्ञान केवल सामान्य बच्चों का ही अध्ययन नहीं करता अपितु असामान्य बच्चों के असंतुलित व्यवहार का भी अध्ययन करता है। बाल-मनोविज्ञान के द्वारा ही हम यह जान सकते हैं कि बच्चों का व्यक्तित्व-विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास इत्यादि समुचित ढंग से कैसे हो सकता है।**'' (सिन्हा, 12)

बड़ों की महत्त्वाकांक्षाओं का भार ढोते हुए बच्चे किस तरह का जीवन जीने के लिए विवश हो रहे हैं–यह अब विश्व चिंता का विषय है और इसी संदर्भ में बच्चों के मनोविज्ञान का सवाल उठता है। बाल मनोविज्ञान की विभिन्न धारणाओं से ग्रसित बंटी की मनोदशा का पता इस उपन्यास में चलता है। बंटी अपनी सारी प्रतिक्रिया इन्हीं धारणाओं से व्यक्त करता है। जैसे:- तनाव, मनोग्रस्तता, बाध्यता, क्रोध एवं आक्रामकता, कुंठा, दुविधा, अकेलापन, अवसाद ।

बच्चों के जन्म के बाद तलाक की तो सोचनी भी नहीं चाहिए, क्योंकि इस फैसले में केवल पति–पत्नी ही शामिल नहीं होते, एक तीसरा पक्ष भी शामिल होता है– बच्चे। अगर तीसरे पक्ष को अनदेखा करके फैसला किया जाए तो वह फैसला नैतिक रूप से एकदम गलत होगा, स्वार्थ की हद तक क्रूर । **''शकुन और अजय तो आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक–दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करे ? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा है।** '' (भंडारी, ix)

किसी भी दंपति के जीवन में बच्चों के भविष्य से बढ़ कर किसी भी चीज को प्राथमिकता नहीं मिलनी चाहिए । अगर बच्चों को जन्म दिया गया है, तो उनका उचित ढंग से पालन–पोषण करना माता–पिता का फर्ज है। लेकिन अजय और शकुन के मध्य अहं की दीवार खड़ी हो गई थी। दोनों स्वाभिमानी थे और रिश्ते को बचाने की पहल न तो शकुन ने की न ही अजय ने, जिसका खामियाजा 'बंटी' को पूरी जिदंगी झेलना पड़ा। उसके कोमल हृदय पर तलाक का बहुत असर पड़ा । बंटी की मनोदशा दिन प्रतिदिन बिगड़ती ही चली गई। पहले तो वह तनाव का शिकार बना, फिर दुविधा, मनोग्रस्तता, बाध्यता, क्रोध एवं आक्रामकता, कुंठा और फिर अवसाद का शिकार हो गया **''गलत और सही अगर कोई हो सकते हैं तो वे अजय, शकुन और बंटी के आपसी संबंध । इस पूरी स्थिति की सबसे बड़ी विडंबना ही यह है कि इन सबंधों के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रैजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है।''** (भंडारी, x)

मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास में फ्रायड, एडलर तथा युंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर बंटी के अंर्तद्वंद्व और उसकी कुंठाओं का अत्यन्त ही मनोवैज्ञानिक आकलन किया है। बंटी की पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसके स्वभाव और व्यवहार में असामान्यता की स्थिति आ गई है। अहं की भावना के प्रबल होने के कारण ही वह सब पर एकाधिकार प्राप्त करना चाहता है, चाहे वह खिलौना हो या माता–पिता। यही कारण है कि डॉ० जोशी और मीरा के प्रति उसके मन में ईर्ष्या का भाव जाग जाता है। उसे लगता है कि इन्हीं के कारण उसके मम्मी–पापा अलग हो गए। उसके व्यक्तित्व में सुखवाद का प्रभाव भी दिखता है जिसके कारण वह सदैव अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहता है और जब वह पूरी नहीं होती तो वह विद्रोह कर बैठता है।

वंशगत विशेषताएँ एवं परिवेश किसी बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में पूर्णत: सहायक होती हैं। बंटी के स्वभाव में भी उसके पापा अजय के स्वभाव और संस्कार को देखकर शकुन सोचती है– **''कैसे आदमी एक छोटे–से अणु में अपना चेहरा, मोहरा, आदत, स्वभाव, संस्कार–सबकुछ अपने बच्चे में सरका देता है।** '' (भंडारी, 112) बंटी भी अपने माता–पिता से योग्यता और अहं की भावना वंशानुक्रम के कारण ही प्राप्त करता है और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण ही वह असामान्य की स्थिति तक पहुँच जाता है। अजय और शकुन के अलगाव के पश्चात् वह अंतर्मुखी हो जाता है। शकुन का अतिरिक्त प्रेम भी उसकी बाल–सुलभ चेष्टाओं का दमन करता है। टीटू की माँ के व्यंग्यबाण से आहत बंटी सदैव मम्मी–पापा की दोस्ती करवाने के उपाय ढूंढ़ता रहता था **''एक बात वह जरूर पूछेगा कि क्या तलाकवाली कुट्टी में कभी अब्बा नहीं हो सकती ? अगर पापा भी साथ रहने लगें तो कितना मजा आए!''** (भंडारी, 51)

जिज्ञासु स्वभाव का बंटी सदैव तर्क की कसौटी पर हर बात को कसता है। मम्मी का तैयार होकर कॉलेज जाना और ड्रेसिंग टेबुल पर रखी रंग–बिरंगी शीशियों का जादू उसे हमेशा कौतूहल में डाल देता था कि इन सबको लगाने के बाद मम्मी एकदम बदल जाती है।

बंटी को सदैव जिज्ञासा रहती है कि मम्मी उसे पापा की कोई बात क्यों नहीं बताती तथा मम्मी–पापा की लड़ाई आखिर क्यों हुई ? इतने बड़े लोग लड़ते क्यों हैं और इस लड़ाई में दोस्ती क्यों नहीं हो सकती '' **मम्मी कभी पापा की बात नहीं**

करतीं। पापा आते हैं तो सरकिट हाउस में ठहरते हैं। ममी को बुलाते भी नहीं, ममी की बात भी नहीं करते। क्या इतने बड़े-बड़े लोग भी लड़ते हैं? ऐसी लड़ाई, जिसमें कभी दोस्ती ही न हो ।'' (भंडारी, 18) ममी को डॉ० जोशी के साथ अनैतिक रूप में देखकर वह अपराध बोध से भर उठता है। ममी को खो देने के कारण उत्पन्न कुंठा उसे पापा की ओर खींचती है।

एडलर का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ी बहुत हीन- भावना होती है जो क्षति-पूर्ति के लिए उसे सदैव प्रेरित करती रहती है। यही कारण है कि टीटू के साथ लड़ाई हो या उसकी माँ के व्यंग्यबाण से आहत बंटी स्वयं को उपेक्षित समझने लगता है जिसकी पूर्ति वह मम्मी-पापा के प्रति एकाधिकार में प्राप्त करना चाहता है और उसमें असफल होने के कारण विद्रोही और आक्रामक स्वभाव का बन जाता है। माँ से आहत बंटी को पिता से भी अपनापन महसूस नहीं होता और उसके दिमाग में सदैव गूंजता रहता है 'तीसरा बच्चा फालतू बच्चा,''तीसरा बंटी फालतू बंटी'।

दूसरे को दु:ख देकर आत्म-संतुष्टि पर-पीड़न कहलाता है तो स्वयं को कष्ट देकर सुख का आभास आत्म-पीड़न है। बंटी भी पेड़ पर चढ़कर, सामान इधर-उधर फेंककर तथा डॉ0 जोशी को पापा न कहकर शकुन को भयभीत और परेशान कर आत्म-संतुष्टि का प्रयास करता है। ममी द्वारा अलग सुला दिये जाने पर उसे दु:ख और क्षोभ होता है जो धीरे-धीरे भय में बदल जाता है, फलस्वरूप वह रात में बिस्तर पर ही सू-सू करने जैसी असामान्य क्रिया कर बैठता है। यह उसके मन में छिपे प्रतिशोध का ही प्रमाण है। अपनी माँ का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह कई उल्टी-सीधी हरकत भी करता है। एक ओर जहाँ उसे ममी का प्रिंसीपल वाला रूप पसंद नहीं वहीं दूसरी ओर वह मीरा को भी ममी नहीं स्वीकारता। संवेदनशीलता के कारण उत्पन्न संकोच बंटी को हमेशा अंदर ही अंदर मथता रहता है, आंदोलित करता है और वह कुछ कह नहीं पाता ।

उपन्यास 'आपका बंटी' में बाल मनोविज्ञान के साथ-साथ नारी मनोविज्ञान का भी यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। शकुन की विवशताएँ, असमर्थताएँ तथा उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ उसे हमेशा-हमेशा बेचैन और विचलित करती रहती हैं; वह कभी सहज नहीं हो पाती । एक उम्दे पद पर आसीन तथा सुन्दर, शिक्षित और सौम्य होते हुए भी वह सुखों से वंचित रह जाती है। **''बाहर से तो तब भी कुछ घटित नहीं होता, एक पत्ता तक नहीं हिलता, पर मन के भीतर ही भीतर उसे जाने कितने आँधी-तूफानों को झेलना पड़ता है। उसने झेले हैं।** '' (भंडारी, 36)

पति अजय के होते हुए भी पति के सुख से वंचित तथा पुत्र बंटी के होते हुए भी उसे सम्पूर्ण रूप से न पा सकने से आहत मन उसे हताश कर देता है। परिस्थितिवश घटित इन सभी घटनाओं के मध्य उसका कॉलेज जाना भी उसे मात्र एक घटना की तरह ही महसूस होता है। वह सदैव खुद को अकेली और नीरस जीवन जीने के लिए अभिशप्त समझने लगती है। उसे लगता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे उसकी जिंदगी में क्षण भर के लिए भी उत्तेजना पैदा हो सके। **''कॉलेज, और कॉलेज के साथ जुड़ी अनेक समस्याओं की आड़ में वह कम से कम किसी में व्यस्त रहने का संतोष तो पा लेती है। वरना उसकी अपनी जिंदगी में कुछ भी तो ऐसा नहीं है जो क्षण भर को भी उत्तेजना पैदा कर सके।''** (भंडारी, 35) वैवाहिक जीवन की हताशा और विवशता ने उसे दयनीय बना दिया- **''तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे... आकांक्षा में रातें।''** (भंडारी, 37) शकुन की स्वाभिमानी वृत्ति उसे उसके दाम्पत्य सुख से वंचित कर देती है, क्योंकि वह दाम्पत्य जीवन में किसी भी समझौते को स्वीकार नहीं कर पाती है। उसकी महत्त्वाकांक्षा उसे अजय को नीचा दिखाने के लिए ही अधिक हुआ करती थी। वास्तविकता तो यह है कि अजय के साथ न रह पाने के दु:ख से ज्यादा इस बात से दु:खी रहती है कि वह अजय को पराजित नहीं कर सकी। यहाँ तक कि वह इतनी क्रूर कल्पना कर बैठती है कि अपने बेटे बंटी को भी अजय से न मिलने देकर उसे मानसिक यंत्रणा देने की सोचती है। **''वह जानती है, अजय बंटी को बहुत प्यार करता है, पर अब से वह बंटी को मिलने भी नहीं देगी। बंटी से न मिल पाने की वजह से अजय को जो यातना होगी उसकी कल्पना मात्र से उसे क्रूर-सा संतोष मिलने लगा।''** (भंडारी, 46)

शकुन को अपनी कमजोरियों का भान तो है परन्तु उससे उबरना उसके वश की बात नहीं है। संभवत: यही कारण है कि वह डॉ0 जोशी से जुड़कर भी इन यातनाओं से खुद को अलग नहीं कर पाती है। वास्तविकता तो यह है कि उसका अहं उसे

छोटा होकर जीने की अनुमति नहीं देता। अजय और बंटी दोनों के कारण ही शकुन हमेशा अंर्तद्वंद्व से जूझती रहती हैं। शकुन ने दोनों को ही अपनी जिंदगी में साथ रखना चाहा परन्तु दोनों ही उसके हाथ से फिसल गए। अजय के विरूद्ध होते हुए भी वह अजय को भूल नहीं पाती। वास्तविकता तो यह है कि अनिश्चयात्मक मानसिकता का द्वंद्व और अहं की टकराहट की त्रासदी ही सदैव झेलती है शकुन ।

'आपका बंटी' उपन्यास के माध्यम से मन्नू भंडारी ने सिर्फ बाल विमर्श ही नहीं, नारी विमर्श की बातों को भी सामने लाने का प्रयास किया है। नारी मन की व्यथा और उसकी वेदना, ऐसा लगता है मानो शकुन एक नारी, एक माँ दोनों पाटों में पिस कर रह गई !!

निष्कर्ष:

हम एक ऐसी अन्योन्याश्रित दुनिया में रह रहे हैं जहाँ बच्चे जो कुछ देखते, सुनते, महसूस करते एवं सीखते हैं वही तय करता है कि वे किस तरह बड़े होंगे और क्या बनेंगे। बच्चों के जीवन में सर्वाधिक प्रभाव माता-पिता का होता है। अजय और शकुन के अहं की टकाराहट के कारण बंटी अपने माता तथा पिता के प्यार से वंचित रह जाता है । किसी भी बच्चे के लिए माता-पिता दोनों का होना समान रूप से अनिवार्य है। बच्चा केवल एक के साथ नहीं रह सकता क्योंकि वह जन्म के उपरांत ही प्रत्यक्ष रूप से दोनों से जुड़ा है और यह हर बच्चे का मानवीय अधिकार भी है। दाम्पत्य जीवन में अहं की कोई जगह ही नहीं होनी चाहिए क्योंकि गलती चाहे किसी की भी हो रिश्ता तो दोनों का है।

मन्नू भंडारी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से माता-पिता को उनके कर्त्तव्यों का बोध कराना चाहा है, केवल बोध कराना ही नहीं बल्कि बच्चों के प्रति भावनात्मक स्वास्थ्य और विकास के प्रति जागरूक कराना भी चाहा है। दाम्पत्य जीवन में अहं की समस्या के दुष्परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहा है, दाम्पत्य जीवन से जुड़े किसी भी फैसले में कभी भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और अहं को बीच में कभी नहीं लाना चाहिए, क्योंकि इससे केवल दो पक्ष ही प्रभावित नहीं होते हैं, तीसरा पक्ष अत्यधिक प्रभावित होता है, वह है बच्चा !! आज के इस आधुनिक दौर में संबंधों में संयम की आवश्यकता है। संयम, प्यार और समझदारी से हम स्वस्थ और सुंदर समाज की परिकल्पना कर सकते हैं !!

संदर्भ ग्रंथ सूची:

भंडारी, मन्नू. (2017). आपका बंटी, नई दिल्ली : राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा. लि.।

यादव, राजेन्द्र. (2015). आदमी की निगाह में औरत, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृ० सं०-229

राजकिशोर. (2005). आज के प्रश्न बच्चे और हम, राजकिशोर, दिल्ली : शब्दसृष्टि प्रकाशन. पृ० सं०-9

सिन्हा, प्रसाद राजराजेश्वरी. (2000). विकासात्मक एवं समाज मनोविज्ञान. पटना : भारती भवन, पृ० सं०-12